४. क्या करेगा तू बता

सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :

(१) संजाल पूर्ण करो :

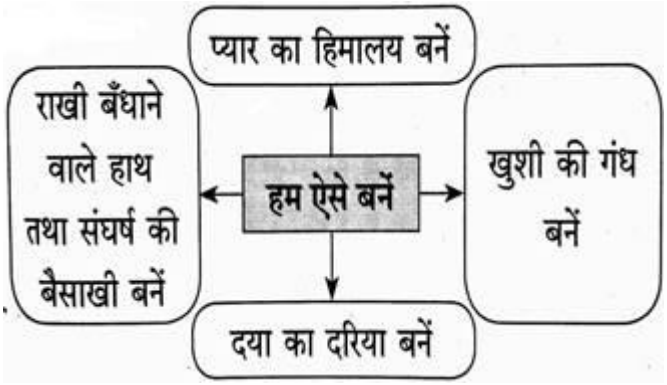

(२) शब्द लिखकर उचित जोड़ियाँ मिलाओ :
उत्तर :

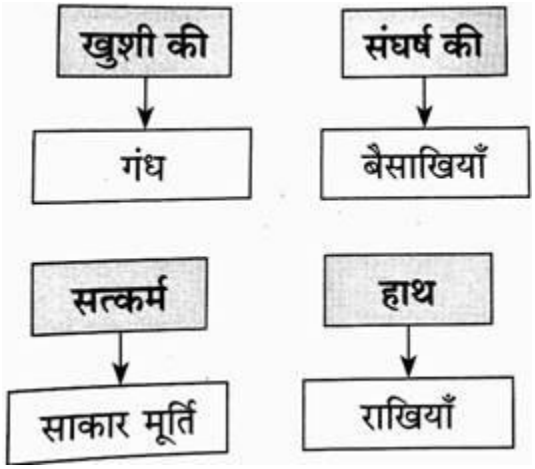

(३) पंक्तियाँ पूरी करो :
उत्तर: सारहीनों **को गगन छूना, बहुत आसान है, सारवानों से धरा की गोद का सम्मान है। रत्न का अभिमान, सागर में कभी पलता नहीं, आँधियों में जो उड़े, उनका पता** चलता नहीं।

(४) संक्षेप में उत्तर लिखिए :

(१) इनसान बनकर हमें इन बातों को अपनाना है।
उत्तर : इनसान बनकर हमें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जिससे हमें शर्मिंदा होना पड़े। हमें अपने कर्म का प्रचार नहीं करना चाहिए। हमें शूल न बन कर फूल बनना चाहिए। अपने ज्ञान और वैभव पर गर्व नहीं

करना चाहिए। ज्ञान अर्जित करने का प्रयत्न करना चाहिए। हमें दीन-दुखियों तथा असहायों की सहायता करनी चाहिए।

(२) हमें प्यार से इन्हें जीतना है।
उत्तर : हमें सत्कर्म तथा सद्धर्म की ऐसी मूर्ति बननी चाहिए, जिससे हम अपने प्यार से सबका हृदय, विश्वास तथा मन जीत लें।

भाषा बिंदु

पाठों में प्रयुक्त अव्यय शब्द ढूँढ़कर उनके भेद लिखो तथा उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो।
अव्यय :
(१) हमेशा कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय ।
वाक्य : रमेश हमेशा की तरह उस दिन भी विद्यालय गया।

(२) जरा परिणामवाचक क्रियाविशेषण अव्यय ।
वाक्य : जरा-सा जोर की आवाज उसके कानों को तकलीफ देती है।

(३) और - समुच्चयबोधक अव्यय । -
वाक्य : राम और श्याम दोनों भाई थे।

(४) पीछे – स्थितिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय ।
वाक्य : मेरा घर विद्यालय के पीछे है।

(५) आस-पास स्थितिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय ।
वाक्य : मेरे घर के आस-पास धान के खेत है।

(६) बाहर – स्थितिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय ।
वाक्य : न्यायालय के बाहर आज बड़ी भीड़ है।

(७) तरह - सादृश्यवाचक संबंध बोधक अव्यय ।
वाक्य : मेरे घर के बाहर गेंदे के फूल की तरह के फूल लगते हैं।

(८) कल कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय । -
वाक्य : राजेश कल मुंबई आ रहा है।

(९) कभी कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय ।
वाक्य : वह मेरे घर कभी नहीं आया।

(१०) मगर - समुच्चय बोधक अव्यय।
वाक्य : मैंने उसे बहुत समझाया मगर उसने मेरी बात नहीं मानी।
इसी प्रकार विद्यार्थी अन्य पाठ से अव्यय ढूँढ़कर उनके भेद लिखे तथा उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करें।

उपयोजित लेखन

'मैं गणित की पुस्तक बोल रही हूँ,' इस विषय पर निबंध लिखो।
उत्तर : 'मैं गणित की पुस्तक बोल रही हूँ।'

तुमने पुस्तकों में अनेक महापुरुषों की आत्मकथाएँ पढ़ी होंगी। लेकिन कभी यह नहीं सोचा होगा कि पुस्तक की भी आत्मकथा होती है। मैं बहुत पुरानी पुस्तक हूँ। मैंने अपने लंबे जीवन में सुख और दुख दोनों भोगे हैं। लो, आज मैं तुझे अपनी कहानी सुनाती हूँ।

मैं आठवीं कक्षा की गणित की पुस्तक हूँ। पहले मैं तुझे अपने जन्म के बारे में बताती हूँ। एक गणित के शिक्षक ने परिश्रम करके मुझे तैयार किया। जब मैं तैयार हो गई, तो शिक्षक महोदय मुझे एक प्रकाशक के पास ले गए। प्रकाशक ने छापेखाने में चित्रों के साथ मुझे छपवाया। मेरी बढ़िया जिल्दसाजी की। लेखक महोदय मुझे देखकर बहुत खुश हुए।

थोड़े दिनों में मैं किताबों की एक दुकान में सजा दी गई। एक दिन एक बुजुर्ग अपने पोते के साथ आए और मुझे खरीद लिया। लड़के ने मेरे ऊपर ब्राउन कागज का चढ़ौना चढ़ाया। लड़का अब मुझे अपने बस्ते में रखकर रोज स्कूल जाने लगा। वह पुस्तकों की देख-रेख ठीक से नहीं करता था। जल्दी ही मेरे पन्ने फटने लगे। बस्ते में लापरवाही से रखने के कारण में मुड़-तुड़ कर पढ़ने लायक ही नहीं रह गई। लड़के ने गणित की नई पुस्तक खरीद ली और मुझे रद्दीवाले को बेच दिया। तब से मैं रद्दीवाले के यहाँ पड़ी-पड़ी अपनी किस्मत को रो रही हूँ। आपने मेरी बात सुनी, इसलिए आपको धन्यवाद।